C.H

Paper I
Ancient India

~~25.01.2020~~

Date :- 15.02.2022

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P College, Chakiya

Q. छठी सदी ई० पू० में होने वाले आर्थिक परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए

कृषि अर्थव्यवस्था :-

छठी सदी ई० पू० में कृषि अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन देखा गया। मध्य दोआब क्षेत्र में जंगलों की सफाई हुई तथा कृषि का प्रसार हुआ। जंगलों की सफाई के लिए अग्नि का प्रयोग पहले से ही हो रहा था तथा वह इस काल में भी जारी रहा। फिर भी लौह उपकरणों के प्रयोग से जंगलों की सफाई के साथ-साथ भूमि की भूमि की जुताई भी अपेक्षाकृत आसान हो गई। लोहे के बने कुदाल तथा लोहे के फाल की सहायता से भूमि के नीचे दबे हुए पेड़ की जड़ को साफ करना अधिक सुगम था। फिर इस काल में लोहे गलाने की पद्धति भी पूर्वकाल की तुलना में अधिक बेहतर हुई। इन्हें आसानी से तोड़ना मोड़ना संभव हुआ। यही वजह है कि इस काल में लोहे के बने कृषि उपकरणों की संख्या बढ़ गई। अतरंजीखेड़ा नामक स्थल से हमें लोहे का हल का फाल भी प्राप्त हुआ है। समकालीन ग्रंथों से भी हमें बेहतर प्रकार की भूमि जुताई के प्रमाण मिलते हैं। उदाहरण के लिए सुत्तनिपात एवं अष्टाध्यायी से सूचना मिलती है कि भूमि को दो-दो, तीन-तीन बार जोता जाता था। फिर इस काल में धान की रोपाई पद्धति का विकास हुआ तथा दासों एवं कर्मकारों को कृषि में लगाया गया। गेहूँ की तुलना में चावल की उपज अधिक थी। अतः मध्य दोआब का यह चावल उत्पादक क्षेत्र अधिक लोगों को खिला सकता था। अतः स्वाभाविक रूप से जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिला। PGW स्थलों की तुलना में NBPW स्थलों की संख्या अधिक मिलती है।

शिल्प विकास :- कृषि अधिशेष ने शिल्प विकास का मार्ग प्रशस्त किया। बौद्ध ग्रंथ में 18 प्रकार के शिल्पों की सूचना मिलती है। शिल्प विकास के परिणामस्वरूप शिल्प विशेषीकरण को प्रोत्साहन मिला। फिर शिल्प विकास के परिणाम स्वरूप एक खास

प्रकार के शिल्पी एक खास क्षेत्र मे बसने लगे। उदाहरण के लिए, वैशाली से कुम्हारों की बस्ती की सूचना मिलती है

वाणिज्य व्यापार :- कृषि अधिशेष एवं शिल्प विकास ने वाणिज्यिक गतिविधियों को बल प्रदान किया। इस काल की व्यापारिक वस्तुओं मे कृषि और गैर कृषि उत्पाद दोनों शामिल थे। महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग अस्तित्व मे थे बौद्ध एवं जैन भिक्षुओं ने उन्हीं मार्गों का अवलम्बन किया जिनका उपयोग व्यापारी कर रहे थे, उदाहरण के लिए महात्मा बुद्ध ने राजगृह से कुशीनगर तक की यात्रा में अनेक व्यापारिक मार्गों को पार किया। राजवैद्य जीवक ने भी तक्षशिला से श्रावस्ती एवं राजगृह तक की यात्रा की थी। इस काल मे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग के रूप मे उत्तरापथ की सूचना मिलती है पाणिनी इससे परिचित था यह मार्ग तक्षशिला को राजगृह से जोड़ता था इस मार्ग पर व्यापारियों के कारवाँ आते थे उदाहरण के लिए समकालीन ग्रंथ मे ऐसे कारवाँ का भी जिक्र किया गया है। जो 1000 व्यापारिक गाड़ियों पर माल ढोकर ले जाते थे

दक्षिणापथ तक्षशिला से स्यालकोट होते हुए एक मार्ग भड़ौच की ओर वही मार्ग यमुना नदी से आगे बढ़कर ताम्रलिप्ति बंदरगाह तक।

मुद्रा अर्थव्यवस्था :-

महाजनपद काल मे अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण लक्षण था मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास। यद्यपि वैदिक काल मे भी हम कुछ सिक्कों का जिक्र पाते है किंतु ये नियमित सिक्के नहीं थे वस्तुतः नियमित सिक्के इसी काल मे प्रचलन मे आए। समकालीन ग्रंथो मे हमें मौद्रिक गतिविधियों की सूचना मिलती है उदाहरण के लिए बौद्ध ग्रंथ से यह ज्ञात होता है कि साकेत के किसी गृहपति ने अपने पुत्र के रोगमुक्त हो जाने पर राजवैद्य जीवक

एक महत्वपूर्ण गृहपति अनाथपिण्ड ने जेतवन विहार खरीद कर बुद्ध को अर्पित किया था। इस प्रकार इस काल में खरीद-बिक्री में मुद्रा का प्रचलन प्रारंभ हो गया था। पुरातात्विक साक्ष्य से भी इस बात की पुष्टि होती है। इस काल से संबंधित सैकड़ों - हजारों आहत मुद्राएं भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं आहत मुद्राएं अधिकतर चाँदी की होती थी किन्तु चाँदी-ताँबे, मिश्रित मुद्राएं और केवल ताँबे की मुद्राएं भी मिली है। आहत मुद्राओं के अतिरिक्त उत्तरी काली पालिशदार मृदभांड (NBPW) स्थल से कौड़ी के भी साक्ष्य मिले हैं। इनका प्रयोग भी मुद्रा की ही तरह किया जाता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस काल में मौद्रिक अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

नगरीकरण :- महाजनपद काल भारत में द्वितीय नगरीकरण का काल था। जहाँ प्रथम नगरीकरण का आधार सिंधु घाटी ने तैयार किया था। द्वितीय नगरीकरण का आधार मध्य गंगा घाटी थी। इस काल में नगरों का प्रसार उत्तर भारत, मध्य भारत एवं उत्तर पश्चिम भारत तक देखा जा सकता था। समकालिन ग्रंथों से विभिन्न नगरों की सूचना मिलती है। एक यूनानी विद्वान अरिस्टोबुलस यह सूचित करता है कि सिकन्दर ने अपने आक्रमण के मध्य झेलम एवं व्यास नदी के बीच नौ राज्यों के साथ-साथ 5000 नगरों को जीता। उत्तर पश्चिम में कुछ नगर अस्तित्व में थे फिर पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में तक्षशिला जैसे नगर होने की सूचना मिलती है। उसी प्रकार बौद्ध ग्रंथों में उत्तर भारत में लगभग 60 नगरों का जिक्र किया गया है। इनमें श्रावस्ती जैसे नगरों की संख्या लगभग 20 थी। फिर 6 नगर ऐसे थे जिनकी पहचान महानगर के रूप में की गई है वे महानगर थे - कौशाम्बी, काशी, श्रावस्ती, साकेत, राजगृह, एवं चंपा। इनमें से कुछ नगरों की पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्य के द्वारा भी की गई है।

C.W
15.09.2022

Paper-III

Date - 15.09.2022

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College, M02

Madival India

दिल्ली सल्तनत का विघटन

(1) **उत्तराधिकार की समस्या :-** सल्तनत के अधीन उत्तराधिकार नियम सुनिश्चित नहीं थे इसलिए सत्ता परिवर्तन एक खूनी संघर्ष का रूप लेता रहा जिसमें महत्त्वाकांक्षी अमीरों ने अहम भूमिका निभाई।

(2) **इक्ता व्यवस्था :-** इक्ता व्यवस्था सल्तनत कालीन प्रशासन का बुनियादी ढाँचा था। भारत में सल्तनत के विस्तार में इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी किन्तु आरंभ से ही इस पद्धति में आंतरिक तनाव विद्यमान था तथा महत्त्वाकांक्षी मुक्ति सुल्तान की कमजोरी से लाभ उठाने का निरंतर प्रयास करते थे फिर दूरवर्ती क्षेत्र में बंगाल, पंजाब, दौलताबाद के मुक्तियों पर नियंत्रण व्यावहारिक रूप से कठिन था।

(3) सल्तनत काल में एक सुदृढ़ नौकरशाही की स्थापना नहीं हो सकी हालाँकि अलग-अलग सुल्तानों ने अलग-अलग प्रयोग किए किंतु यह प्रयोग सफल नहीं हुआ यथा बलबन ने तुर्की नस्लवाद पर बल देकर एक सीमित नौकरशाही को जन्म दिया किन्तु यह पद्धति सफल नहीं रही। आगे मुहम्मद-बिन-तुगलक ने नौकरशाही के आधार का व्यापक विस्तार किया जब उसने विभिन्न जाति एवं सम्प्रदाय तथा देशी-विदेशी सभी तत्वों को नौकरशाही में शामिल किया किन्तु उसका यह प्रयोग भी विफल रहा। आगे- FST ने नौकरशाही को खास परिवारों तक ही सीमित करना चाहा किन्तु उसकी इस पद्धति ने सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया को भी तीव्र कर दिया।

(4) सल्तनत काल के आरंभिक चरण में बड़ी संख्या में मध्य एशिया तथा पश्चिम एशिया से लोगों का आगमन होता तथा वे नौकरशाही में शामिल होते थे